बर्फ़ में बचे रहना

लेखनः जिंजर वैडस्वर्थ

चित्रः क्रैग ऑरबैक

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ट्रकी गैंग - ज़ोए, कॉलिन, जस्टिन, स्टेसी तथा मार्क के लिए - जो उस जगह रहते हैं जहाँ हमेशा बर्फ पड़ती ही रहती है
- जी. डब्ल्यू.

मेरे भाई

और बचपन में सिएरा नेवाडा में बिताए समय के लिए

- सी. एस. ओ.

बर्फ़ में बचे रहना

लेखनः जिंजर वैडस्वर्थ

चित्रः क्रैग ऑरबैक

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

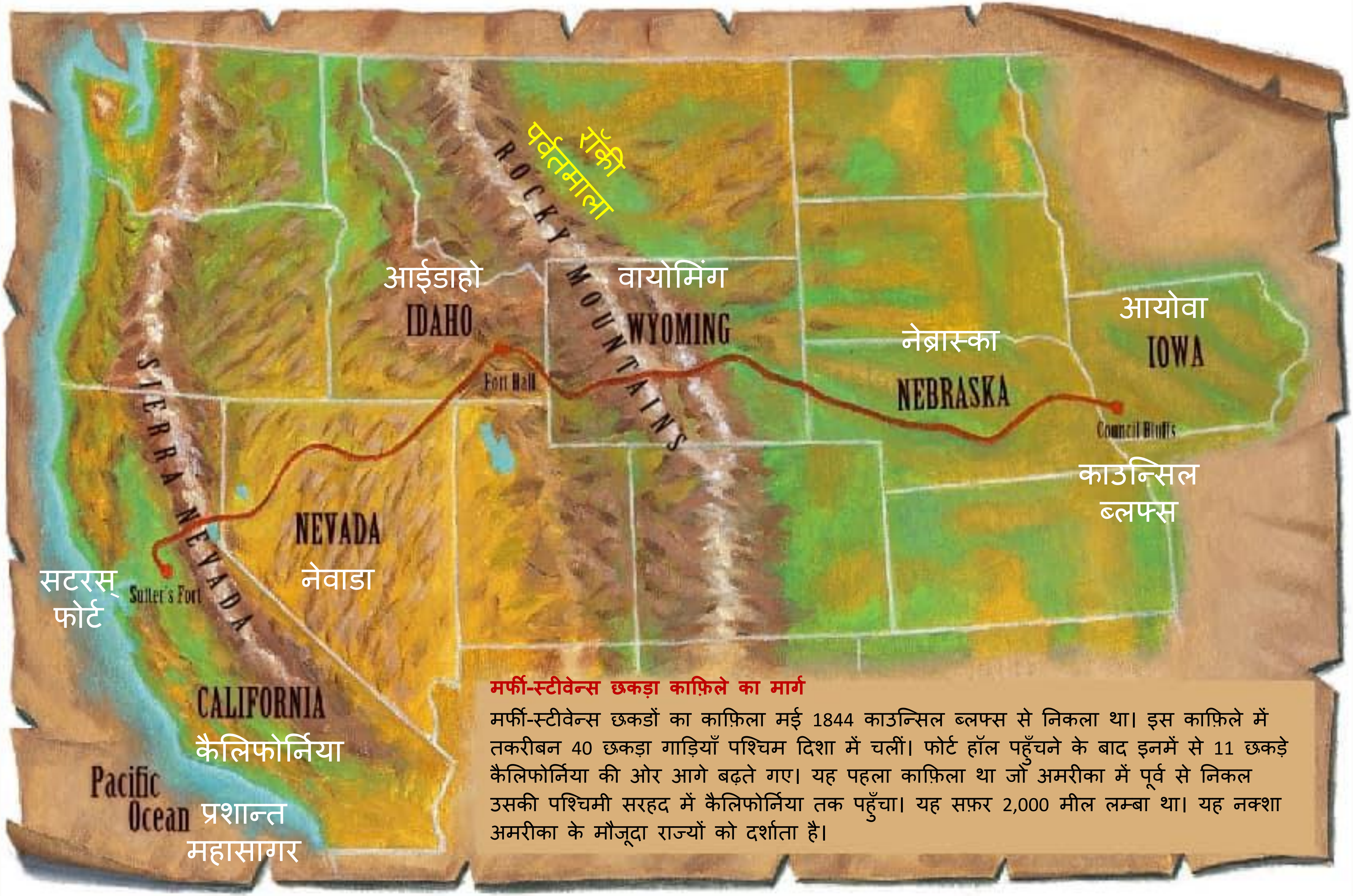

मर्फी-स्टीवेन्स छकड़ा काफ़िले का मार्ग

मर्फी-स्टीवेन्स छकडों का काफ़िला मई 1844 काउन्सिल ब्लफ्स से निकला था। इस काफ़िले में तकरीबन 40 छकड़ा गाड़ियाँ पश्चिम दिशा में चलीं। फोर्ट हॉल पहुँचने के बाद इनमें से 11 छकड़े कैलिफोर्निया की ओर आगे बढ़ते गए। यह पहला काफ़िला था जो अमरीका में पूर्व से निकल उसकी पश्चिमी सरहद में कैलिफोर्निया तक पहुँचा। यह सफ़र 2,000 मील लम्बा था। यह नक्शा अमरीका के मौज़ूदा राज्यों को दर्शाता है।

रोमांच की तलाश में

1844

मेसेस शॉलनबर्गर 17 वर्ष का था,
और रोमांच के लिए तैयार था।
उसकी बहन एलिज़ाबैथ और उसका पति
कैलिफोर्निया में बसने जा रहे थे।
मोसेस उनके साथ जा रहा था।
छकड़ों के काफ़िले के साथ
पश्चिम दिशा में जाना
बेशक रोमांचक होने वाला था।

इन पायोनियरों (पथ-प्रदर्शकों) ने मई में
आयोवा क्षेत्र छोड़ा।
उन्होंने घास के मैदान पार किए।
मोसेस उन बैलों को हाँक रहा था
जो उसकी बहन के छकड़े को खींच रहे थे।
वह और उसके दोस्त जोसेफ व एलन
भैंसों और हिरणों के शिकार में मदद करते।
रात को वे बारी-बारी बैलों की पहरेदारी भी करते।

अक्तूबर में मोसेस ने अब तक देखे पहाड़ों में
सबसे ऊँचे पर्वतों को देखा।
छकड़ों का यह काफ़िला पिछले छह महीनों में
2,000 मील पार कर चुका था।
बर्फ गिर रही थी।
सभी पायोनियर ठंडे और गीले थे।
उनके खाने का सामान कम हो चला था।
उनके थके-हारे बैलों को घास की ज़रूरत थी,
अन्यथा वे मर सकते थे।
पर्वतों के पार पश्चिमी तरफ
एक बड़ी गर्म वादी थी
जो सौ मील दूर थी।
सर्दी पूरी तरह शुरू हो उसके पहले ही पायोनियर
कैलिफोर्निया के उस हिस्से में पहुँच जाना चाहते थे।

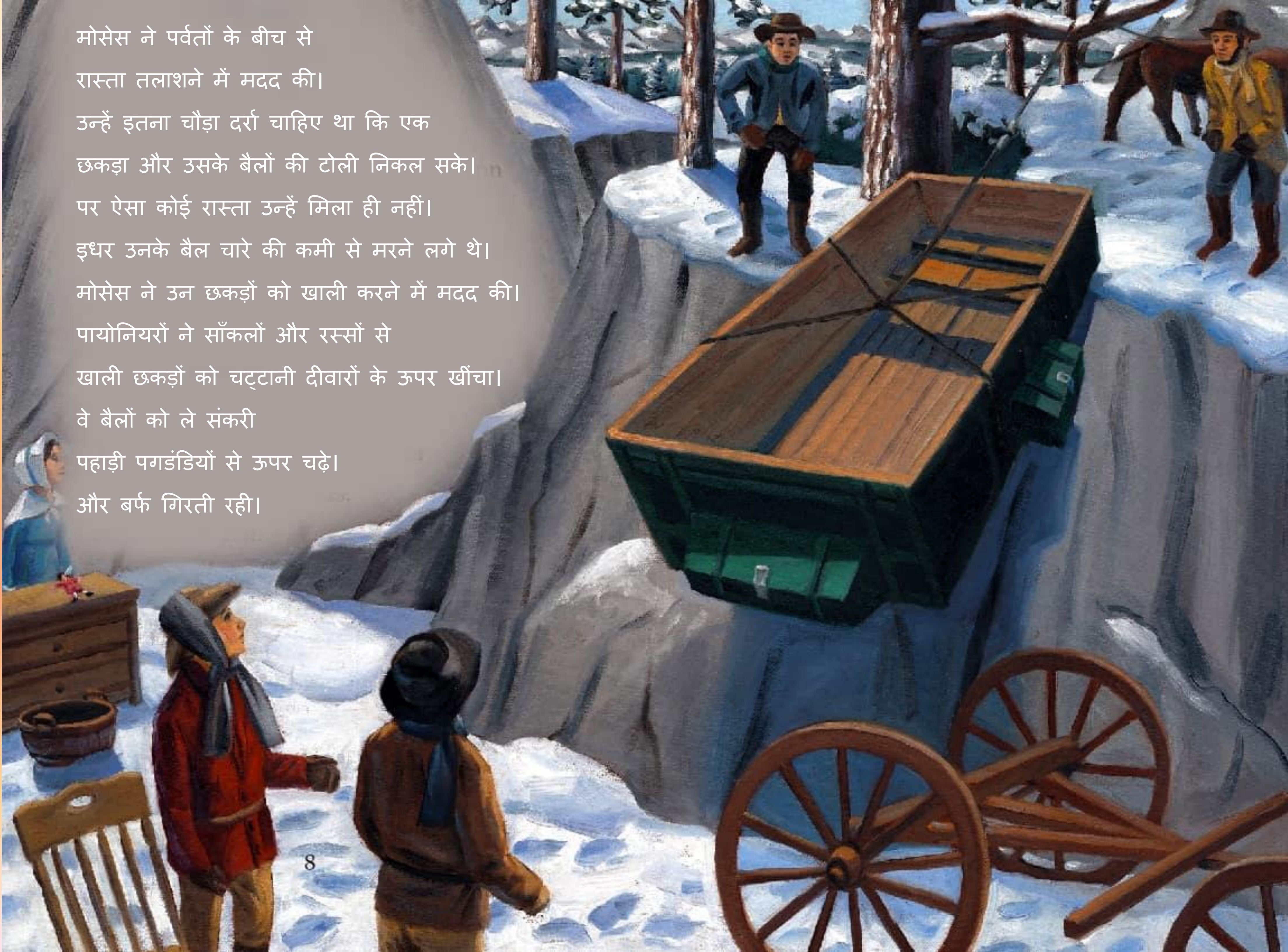

मोसेस ने पर्वतों के बीच से
रास्ता तलाशने में मदद की।
उन्हें इतना चौड़ा दर्रा चाहिए था कि एक
छकड़ा और उसके बैलों की टोली निकल सके।
पर ऐसा कोई रास्ता उन्हें मिला ही नहीं।
इधर उनके बैल चारे की कमी से मरने लगे थे।
मोसेस ने उन छकड़ों को खाली करने में मदद की।
पायोनियरों ने साँकलों और रस्सों से
खाली छकड़ों को चट्टानी दीवारों के ऊपर खींचा।
वे बैलों को ले संकरी
पहाड़ी पगडंडियों से ऊपर चढ़े।
और बर्फ गिरती रही।

उनमें से एक समूह सटरस् फोर्ट (किला) की ओर बढ़ा।
उन्हें अपना अधिकतर सामान पीछे छोड़ जाना पड़ा।
सटरस् फोर्ट पहुँच जाने के बाद
वे बाकी लोगों के लिए मदद भेजने वाले थे।
दूसरा समूह घोड़ों पर सवार हो सीधे आगे बढ़ा।
एलिज़बैथ इस समूह के साथ हो ली।

मोसेस ने अपनी बहन को गले लगाया।
उससे विदा लेना कठिन था।
मोसेस और उसके दोस्त
जोसेफ व एलन पीछे रुके।
उन्होंने लट्ठों से एक केबिन बनाया
और छोड़ा गया सामान उसमें अन्दर रख दिया।

आँखों को चुंधिया देने वाली बर्फ ने
सब कुछ, छकड़ों तक को ढ़क दिया।
मोसेस और उसके दोस्तों ने
शिकार करने की कोशिश की।
पर कई जानवर बर्फ के नीचे
अपने बिलों में शीतनिद्रा कर रहे थे।
दूसरे सर्दियों के लिए प्रवास कर चुके थे।

तीनों दोस्तों ने तय किया
कि वे भूखों मरने के पहले
पैदल ही पहाड़ पार करेंगे।
मदद आने का इन्तज़ार अब वे नहीं कर सकते थे।
उन्होंने जल्दी से बर्फ के जूते बनाए
और बचा-खुचा सूखा माँस साथ लिया।
खाने के नाम पर यही उनके पास बचा था।

बचने की कोशिश

देर नवम्बर, 1844

मोसेस, जोसफ और एलन अगली
सुबह निकल पड़े।
नर्म बर्फ पर चलना मुश्किल था।
मोसेस के पैर दुखने लगे।
उसके बर्फ के जूतों का नाप सही न था।
जल्द ही उसकी मांसपेशियाँ दर्द से गठीली होने लगीं।
पर वह रुक भी नहीं सकता था।
अपने दोस्तों की तरह
मोसेस भी बर्फ से बचना चाहता था।
उन्हें हर हाल में सुरक्षित जगह पहुँचना ही था!
सामने चट्टानी दीवारें थीं
और चारों ओर गहरी बर्फ।
मोसेस को किसी न किसी तरह
उन दीवारों पर चढ़ना ही था।
उसके पास से एक कौव्वा उड़ा
और मोसेस ने सोचा, काश उसके भी पंख होते।

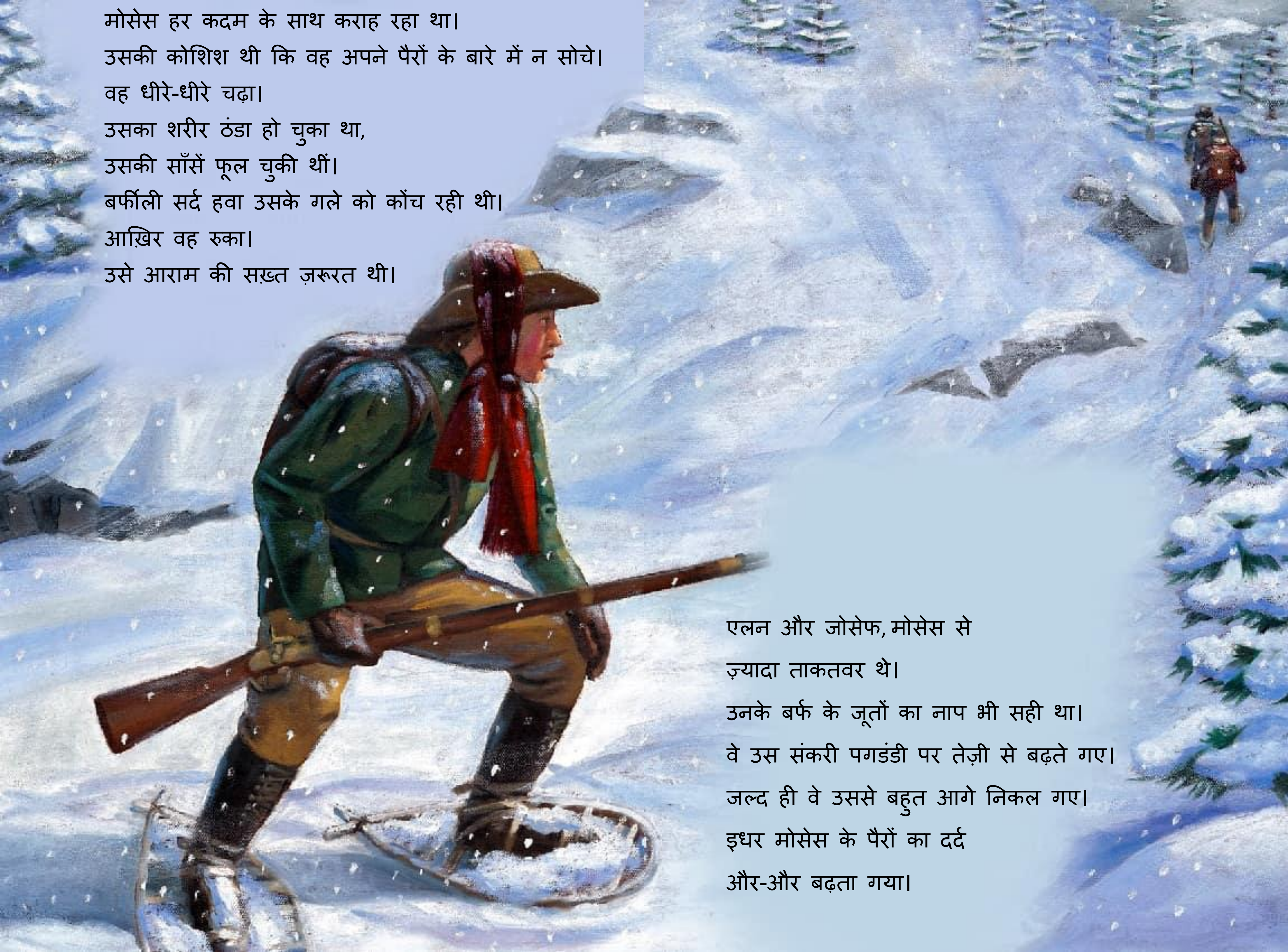

मोसेस हर कदम के साथ कराह रहा था।
उसकी कोशिश थी कि वह अपने पैरों के बारे में न सोचे।
वह धीरे-धीरे चढ़ा।
उसका शरीर ठंडा हो चुका था,
उसकी साँसें फूल चुकी थीं।
बर्फीली सर्द हवा उसके गले को कोंच रही थी।
आख़िर वह रुका।
उसे आराम की सख़्त ज़रूरत थी।

एलन और जोसेफ, मोसेस से
ज़्यादा ताकतवर थे।
उनके बर्फ के जूतों का नाप भी सही था।
वे उस संकरी पगडंडी पर तेज़ी से बढ़ते गए।
जल्द ही वे उससे बहुत आगे निकल गए।
इधर मोसेस के पैरों का दर्द
और-और बढ़ता गया।

वह रात उन्होंने बर्फ में ही बिताई।
आग जला लेने के बावजूद
वे ठंड से जकड़ने लगे।
सुबह मोसेस का शरीर पूरी तरह अकड़ चुका था।
एलन ने खड़े होने में उसकी मदद की।
एक तीखा दर्द उसके पैरों
से तलवों तक दौड़ गया।
अगर एलन और जोसेफ, मोसेस को आराम
देने का इन्तज़ार करते, तो शायद वे भी
सटरस् फोर्ट पहुँच नहीं पाते।
मोसेस के पास एक ही विकल्प था।
उसने अपना झोला पीठ पर बांधा।
अपनी बन्दूक उठाई।
तीनों दोस्तों ने हाथ मिलाए।
और मोसेस केबिन की ओर वापस मुड़ गया।

मोसेस ने पलट कर नहीं देखा।

ऐसा करना बहुत ही मुश्किल होता।

उसे पीठ पर लदा झोला भारी लगने लगा।

और अपना दिल भी।

कदम-दर-कदम,

वह बर्फ के जूतों के पहले बने निशानों के सहारे लौटता चला।

उसके पैर दुख रहे थे।

दर्द के मारे उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

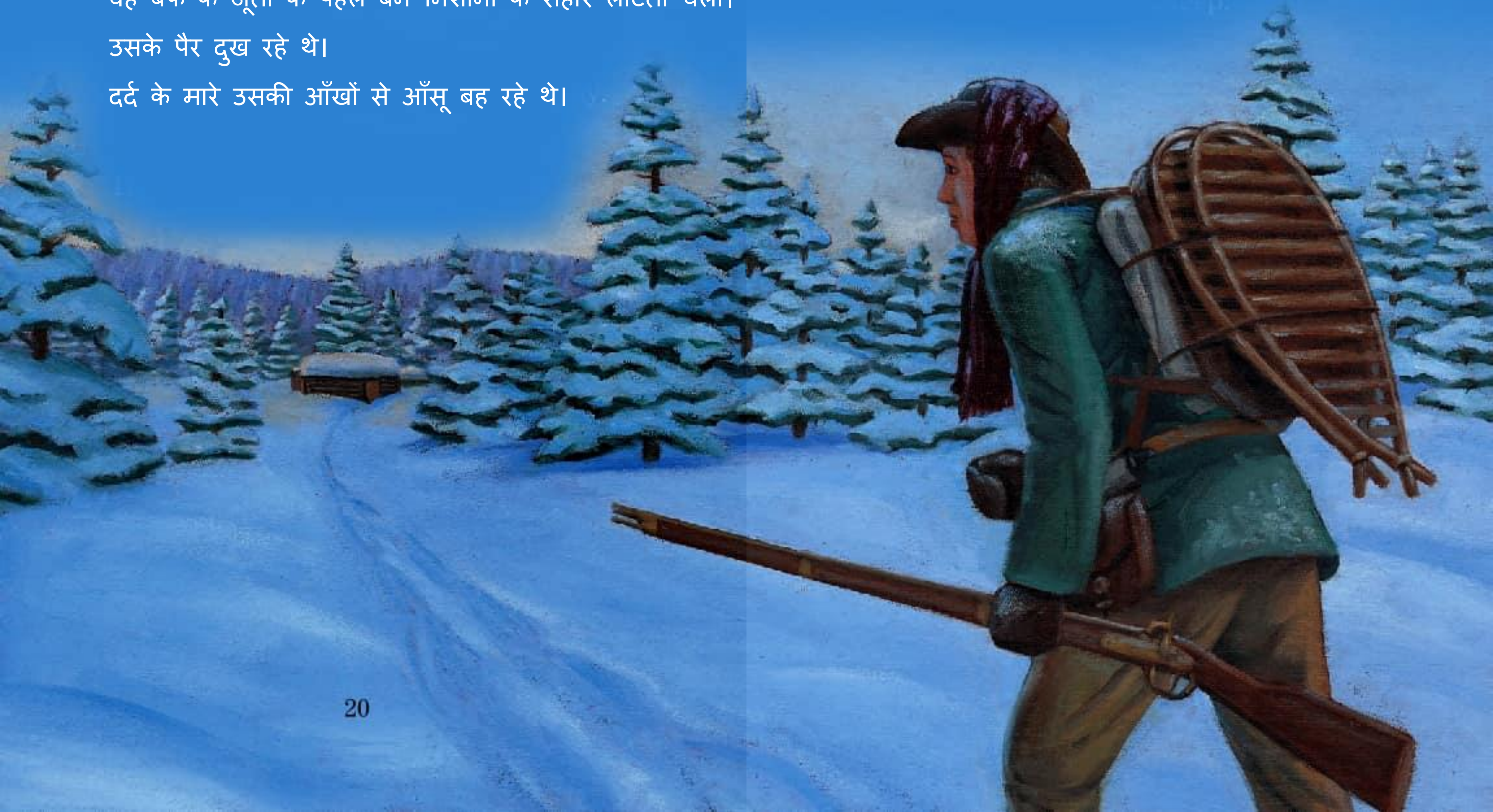

अंधेरा होने के कुछ ही पहले

मोसेस केबिन पहुँच गया।

केबिन अन्दर से ठंडा और अंधेरा था।

उसने अलाव की आग सुलगाई।

और गहरी नींद सो गया।

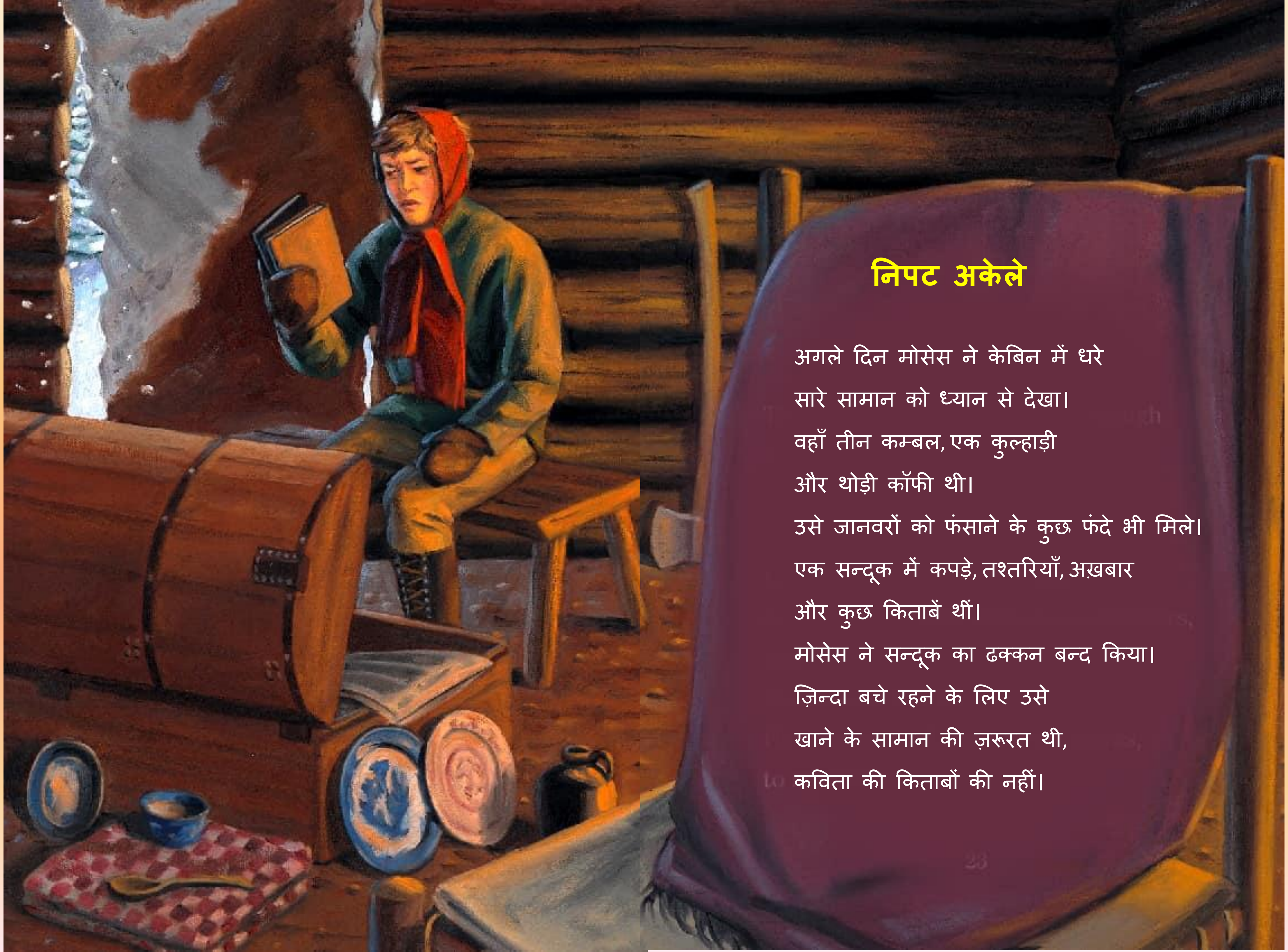

निपट अकेले

अगले दिन मोसेस ने केबिन में धरे
सारे सामान को ध्यान से देखा।
वहाँ तीन कम्बल, एक कुल्हाड़ी
और थोड़ी कॉफी थी।
उसे जानवरों को फंसाने के कुछ फंदे भी मिले।
एक सन्दूक में कपड़े, तश्तरियाँ, अख़बार
और कुछ किताबें थीं।
मोसेस ने सन्दूक का ढक्कन बन्द किया।
ज़िन्दा बचे रहने के लिए उसे
खाने के सामान की ज़रूरत थी,
कविता की किताबों की नहीं।

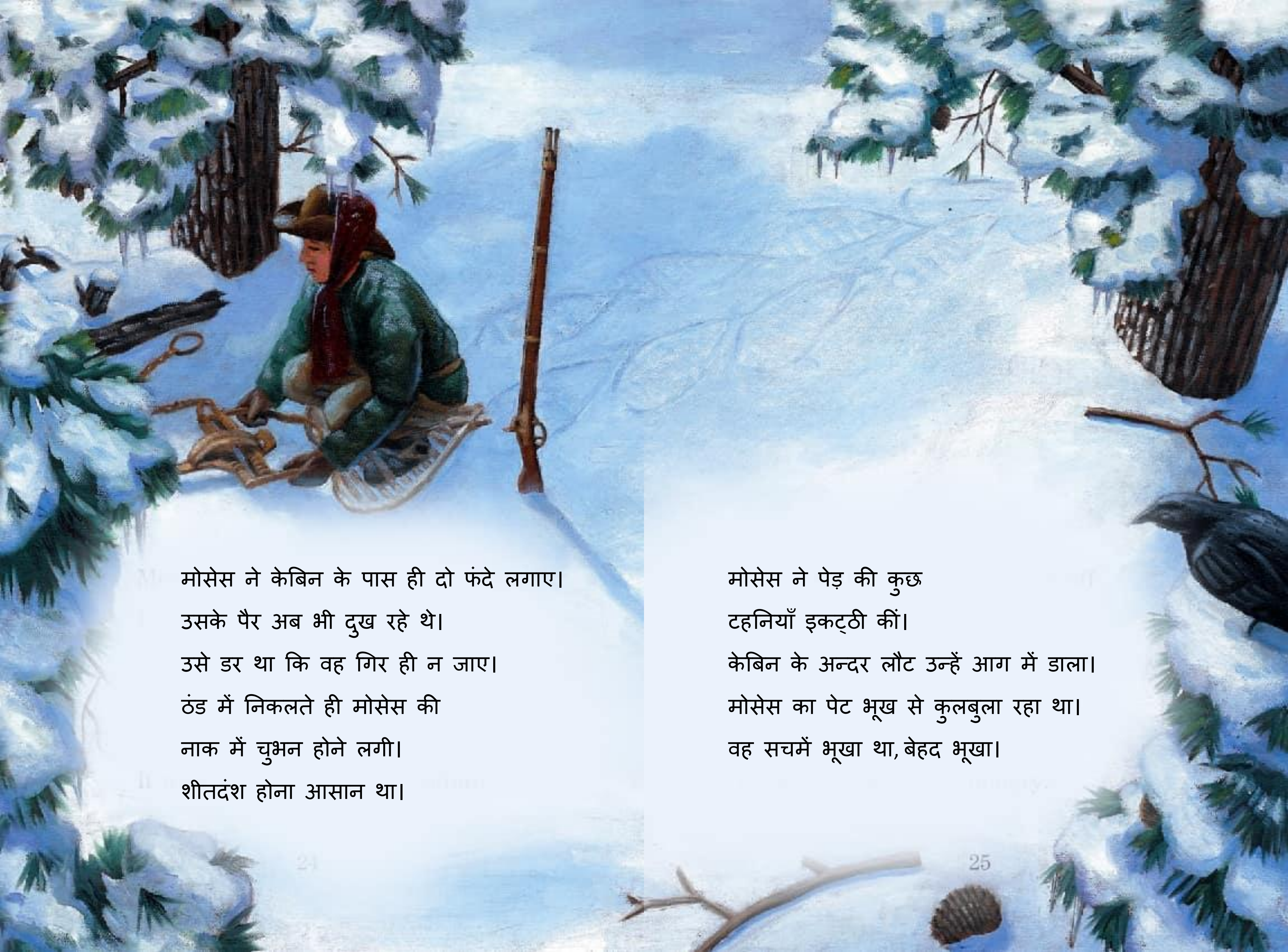

मोसेस ने केबिन के पास ही दो फंदे लगाए।
उसके पैर अब भी दुख रहे थे।
उसे डर था कि वह गिर ही न जाए।
ठंड में निकलते ही मोसेस की
नाक में चुभन होने लगी।
शीतदंश होना आसान था।

मोसेस ने पेड़ की कुछ
टहनियाँ इकट्ठी कीं।
केबिन के अन्दर लौट उन्हें आग में डाला।
मोसेस का पेट भूख से कुलबुला रहा था।
वह सचमें भूखा था, बेहद भूखा।

आख़िरकार मोसेस एक बूढ़े, दुबले-पतले कोयोटी

(लोमड़ी जैसा एक पशु)

को अपने फंदे में फंसा सका।

अपने शिकारी छुरे से

उसने कोयोटी की खाल उतारी।

उसका मांस भूना।

उसकी खुशबू मोसेस को स्वादिष्ट लगी।

पर स्वाद बेहद ख़राब।

उसे खा मोसेस का पेट गड़बड़ाया।

कोयोटे के मांस को शायद धीमी

आंच में उबालना बेहतर होता।

यह सोच मोसेस ने उसे एक बर्तन में डाल उबाला।

स्वाद अब भी ख़राब ही था।

उसने यह कल्पना की मानो वह

भैंसे का कोमल मांस खा रहा हो।

बहुत धीरे-धीरे वह कुछ और खा सका।

इसके बाद मोसेस दो लोमड़ियों को फंसा सका।
उसने एक लोमड़ी को पका कर खाया।
लोमड़ी का मांस उसे स्वादिष्ट लगा।
मोसेस अब भी भूखा था।
पर बचे रहने के लिए उसे समझदार भी बनना था।
सो उसने एक लोमड़ी बचाई।
आधी लोमड़ी उसने अगले दिन खाई,
और बाकी आधी उसके भी अगले दिन खत्म की।

मोसेस हर दिन
पहाड़ों को देखता।
सोचता कि ताकत लौटने पर
वह पश्चिम की ओर चल पड़ेगा।
इस बार वह नाकाम नहीं होगा।
पर सफ़र शुरू करने के पहले उसे
एक तो खाने की सामग्री चाहिए थी।
दूसरे, उसे तूफ़ानों के बीच
लम्बे अंतराल की ज़रूरत थी।

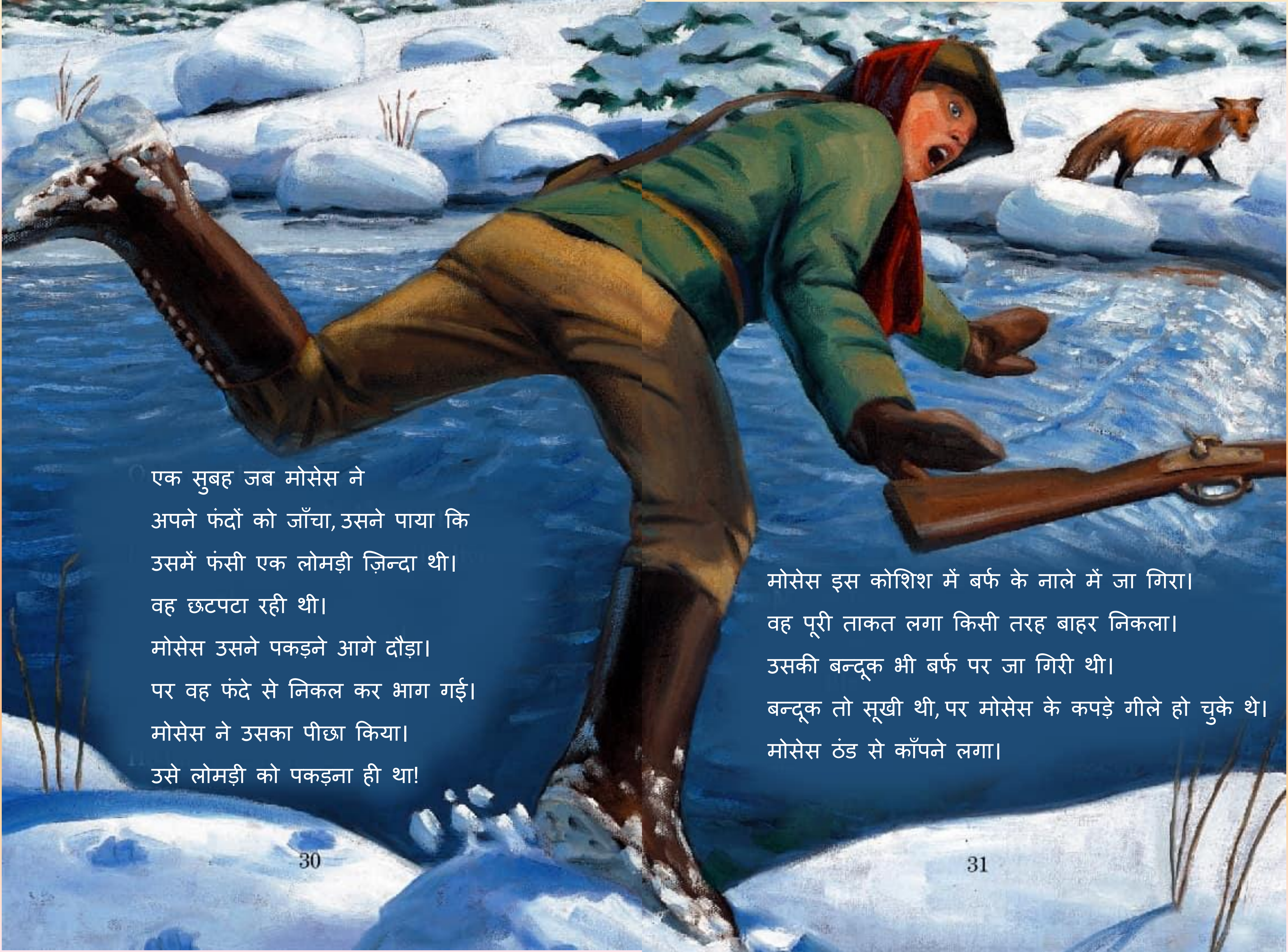

एक सुबह जब मोसेस ने
अपने फंदों को जाँचा, उसने पाया कि
उसमें फंसी एक लोमड़ी ज़िन्दा थी।
वह छटपटा रही थी।
मोसेस उसने पकड़ने आगे दौड़ा।
पर वह फंदे से निकल कर भाग गई।
मोसेस ने उसका पीछा किया।
उसे लोमड़ी को पकड़ना ही था!

मोसेस इस कोशिश में बर्फ के नाले में जा गिरा।
वह पूरी ताकत लगा किसी तरह बाहर निकला।
उसकी बन्दूक भी बर्फ पर जा गिरी थी।
बन्दूक तो सूखी थी, पर मोसेस के कपड़े गीले हो चुके थे।
मोसेस ठंड से काँपने लगा।

जल्दी से केबिन में जा उसने कपड़े उतारे।
एक कम्बल लपेट मोसेस ने खुद को गर्म किया।
उसने घूंट-घूंट भर कॉफी पी।
आख़िरकार उसके दाँतों ने किटकिटाना बन्द किया।
वह खुशकिस्मत था कि वह ज़िन्दा था।

कई दिनों तक हवा चिंघाड़ती रही।
और बर्फ लगातार गिरती रही।
बर्फ ने केबिन को लगभग ढ़क दिया।
वह निपट अकेला था।
वह भूखा और सहमा हुआ था।
शायद उसे अपनी बहन के नाम
एक ख़त लिख छोड़ना चाहिए।
क्या पता बसन्त आने पर
उसे केवल मोसेस की हड्डियाँ ही मिलें?

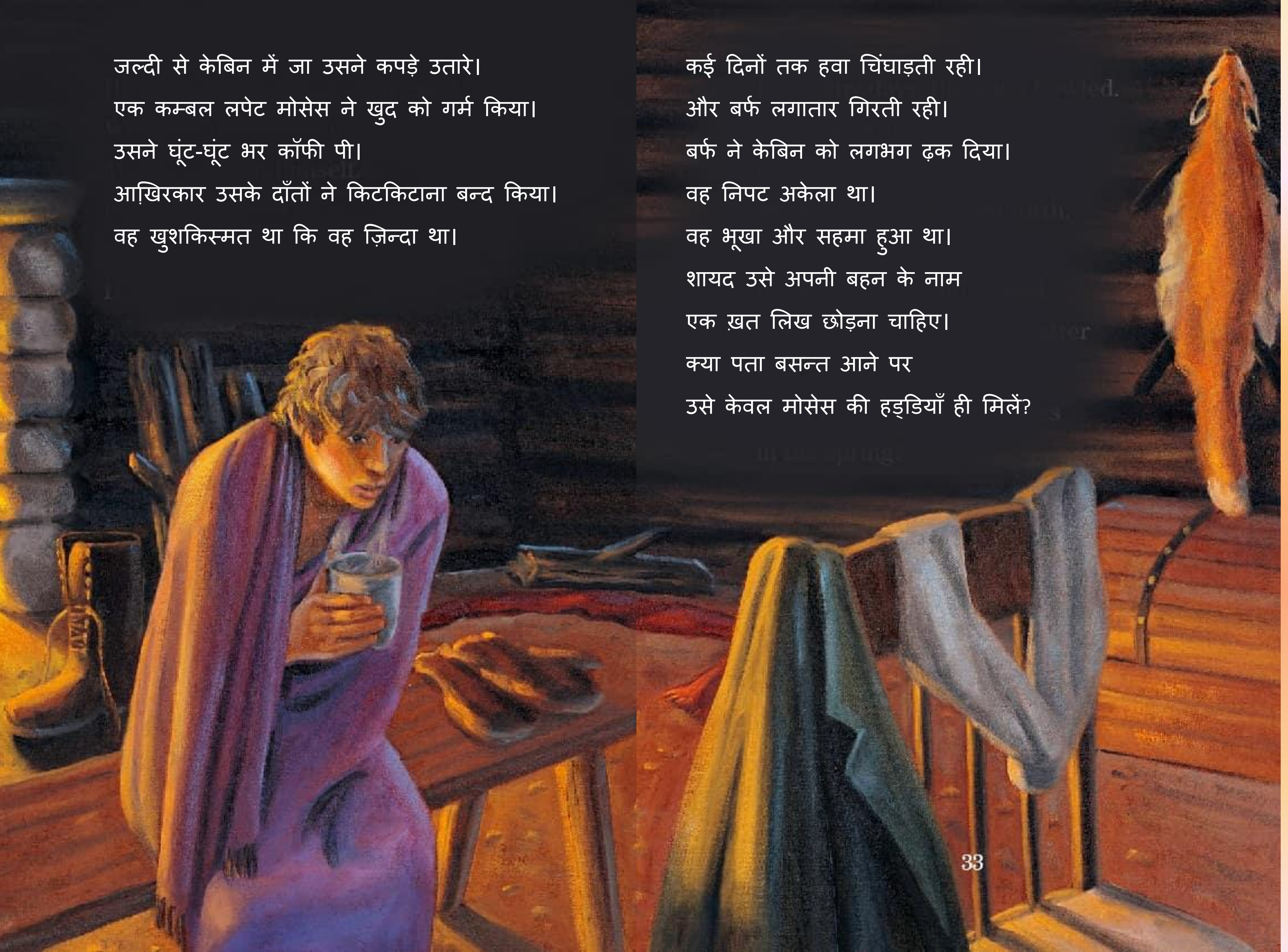

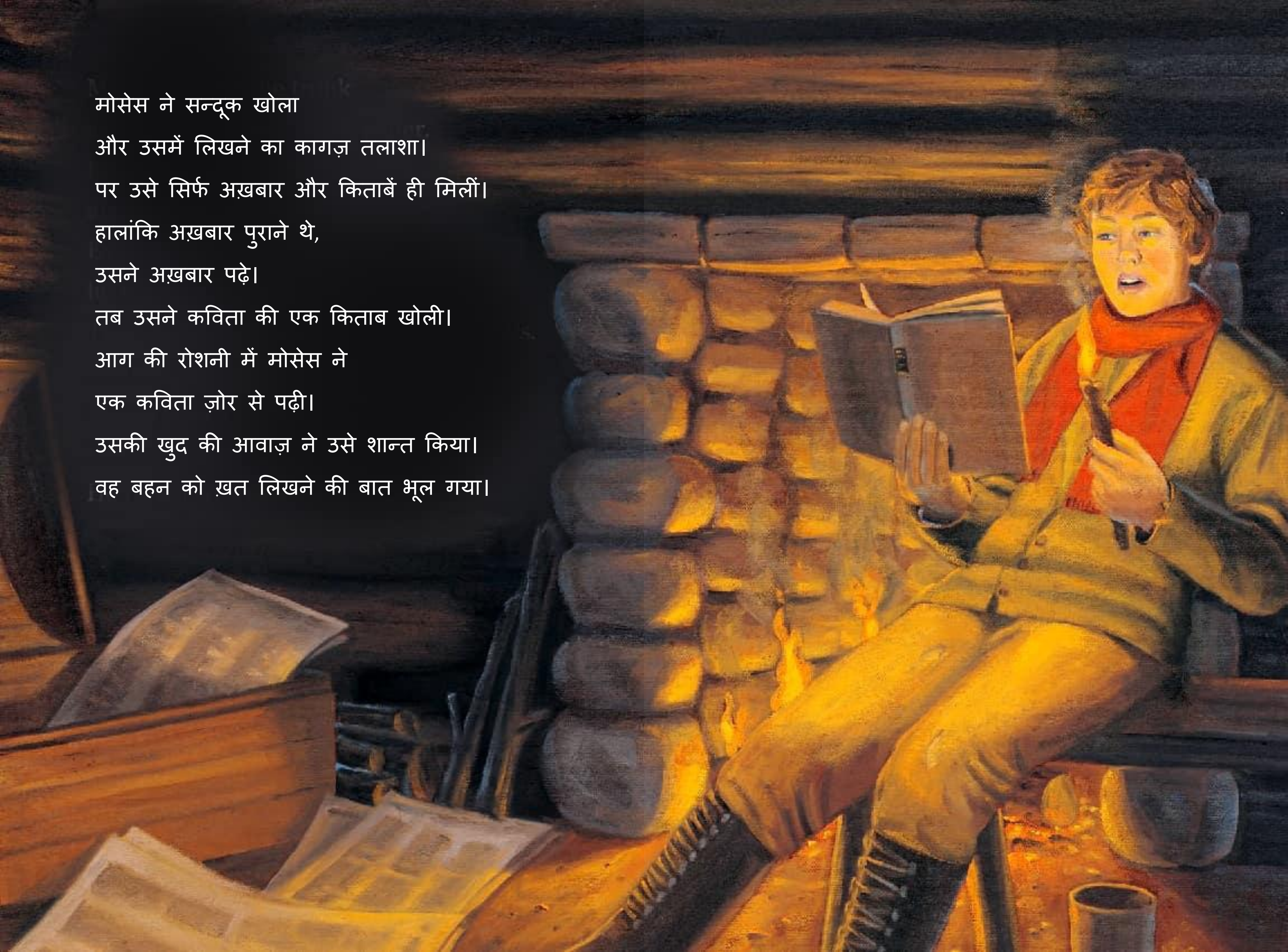

मोसेस ने सन्दूक खोला
और उसमें लिखने का कागज़ तलाशा।
पर उसे सिर्फ अख़बार और किताबें ही मिलीं।
हालांकि अख़बार पुराने थे,
उसने अख़बार पढ़े।
तब उसने कविता की एक किताब खोली।
आग की रोशनी में मोसेस ने
एक कविता ज़ोर से पढ़ी।
उसकी खुद की आवाज़ ने उसे शान्त किया।
वह बहन को ख़त लिखने की बात भूल गया।

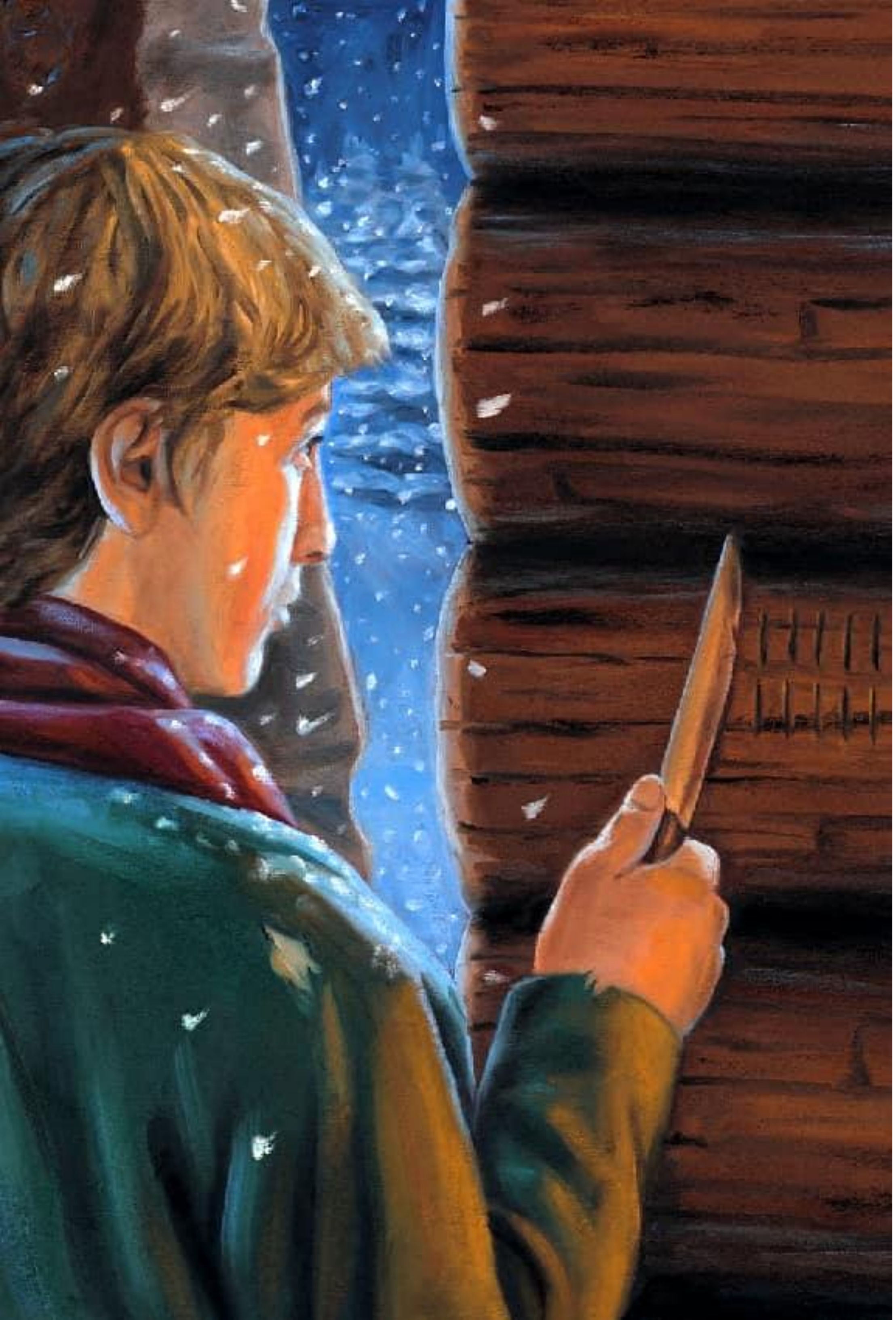

हर रात मोसेस अपना
शिकार करने वाला चाकू निकालता।
दरवाज़े के पास वाले लट्ठे पर
वह एक निशान उकेरता था,
ताकि गुज़रे समय का हिसाब रख सके।
क्रिसमस के दिन मोसेस ने
अपनी कॉफी खत्म की।
उसने एलिज़ाबैथ के बारे में सोचा।
उन्होंने क्रिसमस हमेशा साथ-साथ बिताई थी।
बाहर सर्दियों की हवा गरज रही थी।
अन्दर मोसेस ने एक कविता का पाठ किया।
अब तक उसे कई कविताएं
कंठस्थ हो चुकी थीं।

नए साल का दिन आया और बीत गया।
मोसेस ने खुद के उकेरे तीस से ज़्यादा निशान गिने।
वह महीने भर से ज़्यादा समय निपट अकेले बिता चुका था।
यह सिलसिला उसे अंतहीन लगने लगा था।
उसके बाल इस कदर उलझे थे
मनो गिलहरी का घोंसला हों।
उसके कपड़ों से बू आने लगी थी।

आख़िरकार फरवरी में जा कर बर्फीले तूफ़ानों
के बीच अन्तराल होने लगे।
पर तापमान और गिरा।
बर्फ की ऊपरी सतह जमकर कठोर हो गई।
मोसेस अब बर्फ पर चल सकता था।
जैसे ही तूफ़ानी बादल छंटते
वह अपने सफेद कैदघर से बाहर निकलता।

एक दोपहर को मोसेस को लगा वह
आगे बहुत दूर किसी इन्सान को देख रहा है।
उसने अपनी आँखें मलीं।
सचमें कोई उसकी ओर चला आ रहा था।
वह डेनिस मार्टिन था,
जो छकड़ा काफ़िले में उसके साथ था।
मोसेस की आँखें छलक आईं।
वे एक-दूसरे के गले मिले।
डेनिस अपने साथ खाना और खुशखबरी लाया था।
मेसेस की बहन एलिज़ाबैथ सटरस् फोर्ट
में सुरक्षित थी।
काफ़िले के बाकी लोग भी।
मोसेस ने डेनिस से इल्तजा की, कि वह बोलता जाए।
किसी दूसरे की आवाज़ सुनने के इन्तज़ार में
उसने तीन महीने जो गुज़ारे थे।
कितनी मधुर थी यह आवाज़!

पहाड़ों के पार
मार्च 1845

अगली सुबह मोसेस और डेनिस
पहाड़ों की दीवार की ओर चल दिए।
मोसेस ने केवल एक ही बार पलट कर देखा।
उसने केबिन को देखा
जिसकी एक दीवार पर जमे हुए
ग्यारह कोयोटे लटके थे।
वह अब कभी कोयोटे का मांस खाना नहीं चाहता था!
दोनों पहाड़ पर ऊपर और ऊपर चढ़ते गए।
बर्फ गहरी थी।
बर्फीली हवाएं उन्हें धकेल रही थीं।
जल्द ही वे एक संकरे दर्रे तक पहुँचे।
तूफ़ानी घटाएं घिरने लगी थीं।
वे तेज़ी से कदम बढ़ाने लगे।

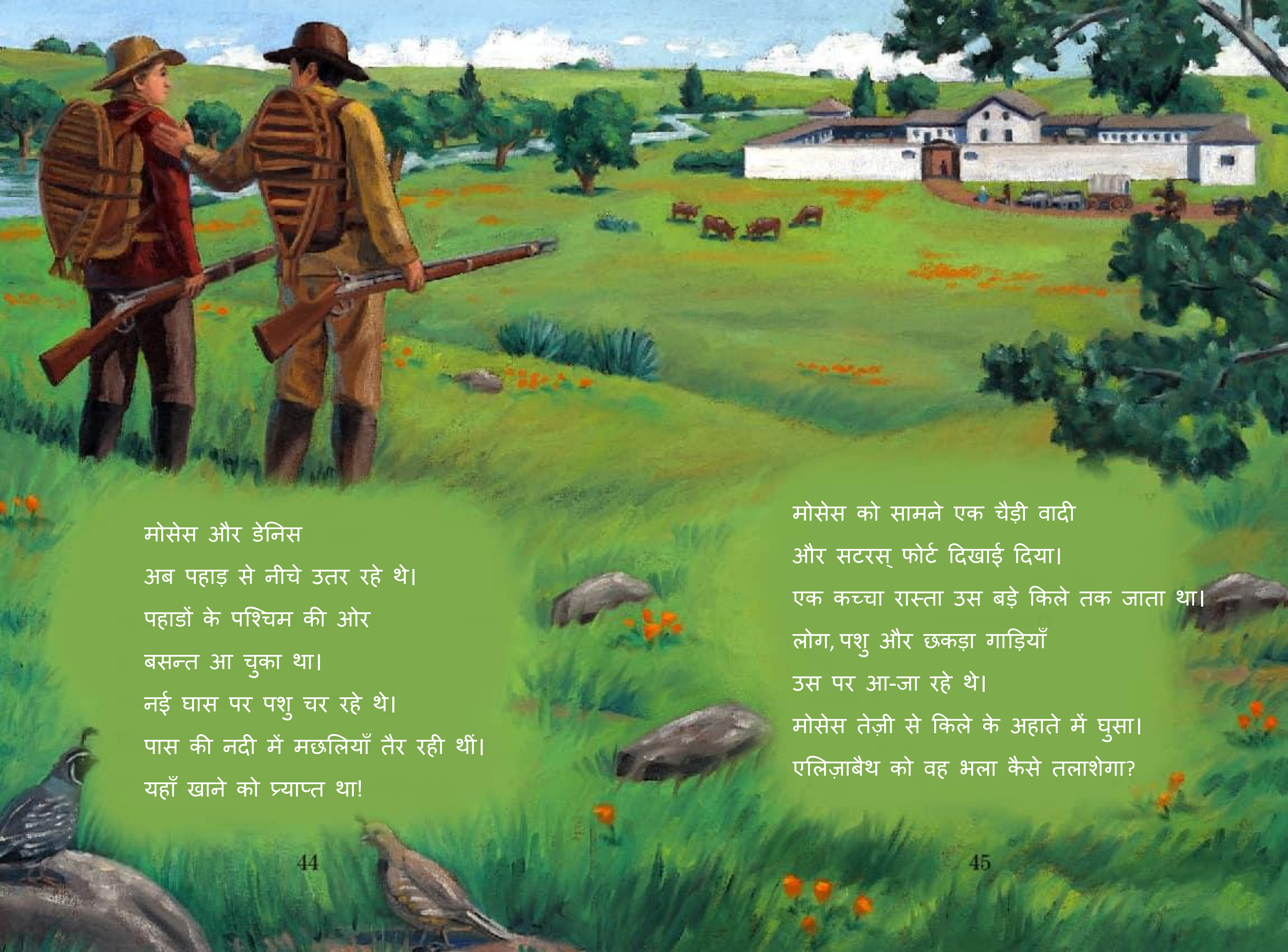

मोसेस और डेनिस
अब पहाड़ से नीचे उतर रहे थे।
पहाडों के पश्चिम की ओर
बसन्त आ चुका था।
नई घास पर पशु चर रहे थे।
पास की नदी में मछलियाँ तैर रही थीं।
यहाँ खाने को प्र्याप्त था!

मोसेस को सामने एक चैड़ी वादी
और सटरस् फोर्ट दिखाई दिया।
एक कच्चा रास्ता उस बड़े किले तक जाता था।
लोग, पशु और छकड़ा गाड़ियाँ
उस पर आ-जा रहे थे।
मोसेस तेज़ी से किले के अहाते में घुसा।
एलिज़ाबैथ को वह भला कैसे तलाशेगा?

उसे खुली जगह के दूसरे छोर पर
हाथ हिलाती एक स्त्री दिखी।
वह स्त्री इतनी तेज़ी से दौड़ी
कि उसकी टोपी उसके सिर से उड़ गई।
यह तो एलिज़ाबैथ ही थी।
मेसेस भी उसकी ओर दौड़ा।
भाई-बहन आपस में गले मिले।
वे रोए।
मोसेस के अकेले बिताए महीने अब खत्म हो चुके थे।

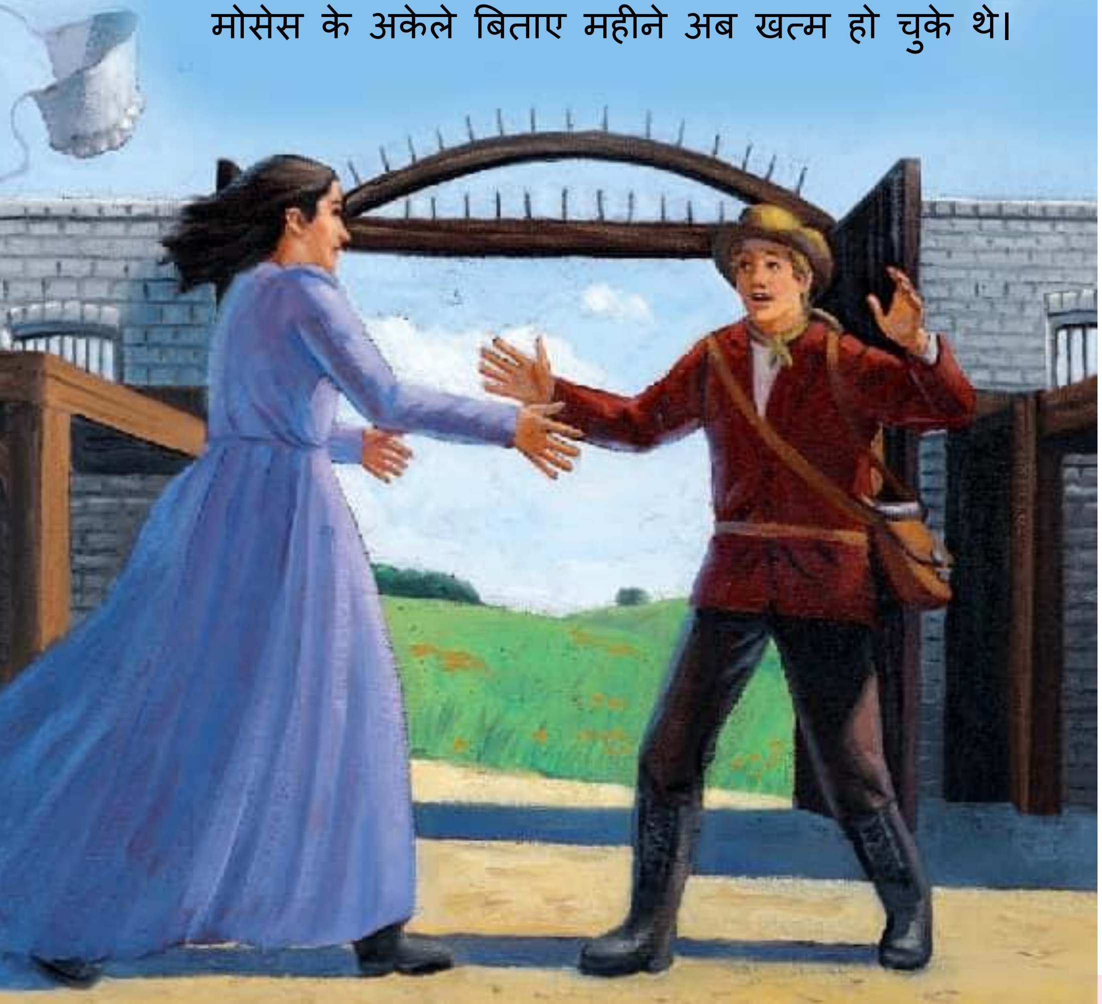

उपसंहार

मोसेस शैलनबर्गर मर्फी-स्टीवन्स छकड़ों के उस काफ़िले का हिस्सा था, जो आयोवा क्षेत्र के काउन्सिल ब्लफ्स से 1844 में निकल था। यह पहला काफ़िला था जो सिएरा नेवाडा की ऊँची पर्वतमाला को पार कर कैलिफोर्निया पहुँचा था।

नवम्बर 1846 में एक और काफ़िला, जो डॉनर पार्टी कहलाया, सिएरा नेवाडा के पूर्व में पहुँचा। जब तक वे वहाँ पहुँचे बर्फ गिरने लगी और तब गिरती रही। मोसेस की ही तरह डॉनर पार्टी भी वहाँ फंस गई। उन्होंने बचाव के लिए तम्बू गाड़े और छोटे तालाब के पास छोटे केबिन बनाए। एक परिवार ने तो मोसेस के केबिन में पनाह ली। डॉनर पार्टी के पास भी सर्दियों में बचे रहने के लिए पर्याप्त खाना नहीं था। उन्हें 1847 में बचाया जा सका। तब तक कुछ लोगों की मौत हो चुकी थी।

मोसेस ने अपना शेष जीवन कैलिफोर्निया में बिताया। उसकी बहन एलिज़ाबैथ और उसके पति की मौत 1850 में हैजे की महामारी में हो गई। उनके नन्हे शिशु को मोसेस ने पाला-पोसा। 1850 में ही कैलिफोर्निया संयुक्त राज्य अमरीका का 31वाँ राज्य बना।

बर्फ़ में बचे रहना

मोसेस और उसकी पत्नी फैनी और उनके पाँच बच्चे सान होसे, कैलिफोर्निया के एक खेत में रहते रहे। जब मोसेस वृद्ध हो गया उसने अपनी कहानी अपनी बेटी से, बोल कर लिखवाई। 1901 में 82 वर्ष की आयु में, मोसेस की मृत्यु हुई।

मोसेस की कहानी डॉनर तालाब और वर्तमान कैलिफोर्निया के ट्रकी कस्बे में घटी थी। यह जगह दुनिया के सबसे बर्फीले स्थानों में एक है।

सत्रह वर्षीय मोसेस रोमांच के लिए तैयार था। 1844 में वह छकड़ों के उस काफ़िल में शामिल हुआ जो आयोवा से कैलिफोर्निया जा रहा था। पर सर्दियाँ शुरू होने के साथ काफिला मुसीबत में फंस गया। उनके बैल चारे के बिना मरने लगे। खाने-पीने की सामग्री खत्म हो चली। सो समूह के कुछ लोग मदद पाने आगे निकले। मोसेस उनके छोड़े गए सामान के साथ पीछे रुका। क्या वह पहाड़ी में निपट अकेले, लम्बी और बर्फीली सर्दियों में बचा रह सकेगा?